डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15, जून (मई–जून संयुक्तांक)2021

वर्षः 04, अंकः 07–08

नवाचार भारत के सतत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगाः डॉ0 मनप्रीत 03

सामूहिक प्रयास से ही कोरोना के खिलाफ लड़ाई जीत सकते हैं : कुलपति 04

पर्यावरण को बचाना हम सभी की नैतिक जिम्मेदारीः कुलपति

05 जून । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पृथ्वी एवं पर्यावरण विज्ञान संस्थान, वीमेन ग्रीवेंस एवं वेलफेयर सेल तथा महिला अध्ययन केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में "इकोसिस्टम रेस्टोरेशन" विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि आज वनों को संरक्षित करने के लिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने की जरूरत है। अपने घरों के आसपास छायादार वृक्ष लगाएं जिससे आने वाली पीढ़ी को स्वस्थ पर्यावरण दे सकें। कुलपति ने कहा कि कोरोना महामारी का बहुत बड़ा कारक पर्यावरण को क्षति पहुंचाना रहा है। पर्यावरण को बचाए रखना हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी बनती है। कुलपति ने कहा कि वर्तमान समय में कार्बन डाइऑक्साइड की अधिकता से पृथ्वी का तापमान तेजी से बढ़ रहा है। जिसके कारण विश्व भर में ग्लोबल वार्मिंग का खतरा भी तेजी से बढ़ रहा है। मनुष्य का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। इससे निपटने के लिए पर्यावरण को संरक्षित करना होगा। कुलपति ने कहा कि पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली के लिए भारतीय समाज को आगे आना होगा और लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना होगा।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए नेशनल बॉटेनिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिक डॉ0 दिलीप कुमार उप्रेती ने कहा कि इकोसिस्टम रेस्टोरेशन हमारी पारिस्थितिकी तंत्र पर निर्भर करती है। इसके विनाश का कारक पृथ्वी पर तेजी से बढ़ रहा तापमान है। इसका कारण कहीं ना कहीं पर्यावरण को क्षति पहुंचाना रहा है। उन्होंने बताया कि आधुनिकता की इस दौड़ में प्रदूषण काफी तीव्र गति से बढ़ रहा है, इसके बहुत से दुष्परिणाम सामने आ रहे है।

कहीं सूखा पड़ रहा है तो कही बारिश की अधिकता है। कई तूफान उठ रहे है, साथ ही तापमान में बढोत्तरी भी हो रही है, जिसके कारण हिमखण्ड तेजी से पिघल रहे हैं। इस पर शीघ्र नियंत्रण नहीं किया गया तो आने वाले 2070 तक पृथ्वी का तापमान कई गुना बढ़ जाएगा। उन्होंने कहा कि इकोसिस्टम रेस्टोरेशन के लिए सभी का दायित्व बनता है कि पानी का दुरुपयोग कम से कम करें, बिजली की बचत करें, प्रदूषण फैलाने वाले प्लास्टिक का प्रयोग न करें। इन सभी उपायों से तथा सामूहिक प्रयास द्वारा पर्यावरण को सुरक्षित किया जा सकता है। उन्होंने प्रधानमंत्री द्वारा चलाई जा रही नमामि गंगे प्रोजेक्ट के बारे में बताते हुए कहा कि अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें एवं वृक्षारोपण के प्रति समाज को जागरूक करें।

नरेन्द्र देव कृषि विश्वविद्यालय की डॉ0 सुमन प्रसाद मौर्य ने बताया कि जंगलों को नया जीवन देकर पेड़ पौधे लगाकर, बारिश के पानी को संरक्षित कर और तालाबों का निर्माण कर हम इकोसिस्टम रेस्टोरेशन कर सकते है। उन्होंने बताया कि पर्यावरण सुधार में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसलिए उन्हें पर्यावरण के प्रति जागरूक करना अति आवश्यक है। मनुष्य की कुछ आदतें भी पर्यावरण को प्रदूषित करती रहती हैं जैसे धूमपान, थूकना आदि। अपने घर की साफ–सफाई के साथ–साथ अपने घर के आस–पास भी स्वच्छता का वातावरण बनाना चाहिए।

पृथ्वी एवं पर्यावरण विज्ञान संस्थान के निदेशक एवं वेबिनार के संयोजक प्रो0 जसवंत सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि इकोसिस्टम रेस्टोरेशन पर्यावरण के लिए जरूरी है, इससे पर्यावरण को सुरक्षित कर सकते हैं। वीमेन ग्रीवेंस एवं वेलफेयर सेल की समन्वयक प्रो0 तुहिना वर्मा ने पर्यावरण दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन प्रो0 जसवंत सिंह ने किया। पर्यावरण विज्ञान के विभागाध्यक्ष प्रो0 सिद्धार्थ शुक्ल ने अतिथियो के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। तकनीकी सहयोग मनीषा यादव एवं राजीव कुमार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, प्रो0 नीलम पाठक, प्रो0 चयन कुमार मिश्र, प्रो0 एस0एस0 मिश्र, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, वेबिनार के समन्वयक डॉ0 विनोद चौधरी एवं सह समन्वयक डॉ0 सिंधु सिंह, प्रो0 के0के0 वर्मा, डॉ0 अनिल कुमार, डॉ0 दिवाकर त्रिपाठी, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 अनिल मिश्र, डॉ0 महिमा चौरसिया, डॉ0 त्रिलोकी यादव, डॉ0 कपिल राना, डॉ0 संजीव कुमार सहित बड़ी संख्या में प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े रहे।

नए सत्र से नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप पठन–पाठन : कुलपति

01 मई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के तहत एन0ई0पी0 टास्क फोर्स एवं बोर्ड ऑफ स्टडीज के संयोजकों के साथ ऑनलाइन बैठक एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। बैठक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के प्रावधानों के अनुरूप उच्च शिक्षा विभाग द्वारा तैयार किए गए न्यूनतम समान पाठ्यक्रमों को उत्तर प्रदेश के समस्त राज्य, निजी विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों में सत्र 2021–22 से लागू किए जाने के सम्बन्ध में चर्चा की गई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने बताया कि 15 मई, 2021 तक राज्य विश्वविद्यालयों को बोर्ड ऑफ स्टडीज एवं अन्य प्रक्रियाओं को अपनाते हुए विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों में अधिकतम 30 प्रतिशत के संशोधन के साथ अंगीकृत किया जाना है। नए सत्र 2021–22 से राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्राविधानों के अनुरूप पठन–पाठन की व्यवस्था भी सुनिश्चित कराई जानी है। न्यूनतम समान पाठ्यक्रम का 70 प्रतिशत अनिवार्य रूप से लागू किया जाना है। न्यूनतम समान पाठ्यक्रम की संरचना में किसी भी प्रकार का बदलाव नहीं किया जा सकेगा। सभी विषयों के शीर्षक प्रत्येक विश्वविद्यालय में समान होंगे।

बैठक में कुलपति प्रो0 सिंह ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के तहत जिला समन्वयक समिति की संरचना एवं गठन पर विस्तृत चर्चा की। जिसमें निर्णय लिया गया कि विश्वविद्यालय स्तर पर गठित एन0ई0पी0 टास्क फोर्स में सम्बद्धता परिक्षेत्र के 07 जिलों का प्रतिनिधित्व कर रहे प्राचार्यगण सम्बन्धित जिले में एन0ई0पी0–2020 जिला समन्वय समिति के अध्यक्ष होंगे। जिला समन्वय समिति में जिले के समस्त अनुदानित महाविद्यालयों को प्रतिनिधित्व देने के साथ–साथ जिले के उत्तम शैक्षिक व्यवस्था वाले 03 से 05 स्ववित्तपोषित महा–विद्यालयों के प्रबंधक एवं प्राचार्य को भी शामिल किए जाने की सहमति बनी। इसके साथ ही समिति के अध्यक्ष आंतरिक सहायता के लिए अपने महाविद्यालय के 1 या 2 शिक्षकों को भी समिति में स्थान प्रदान दे सकते हैं। कुलपति ने बताया कि एनईपी में सभी विषयों के प्रश्नपत्र 100 अंक के होंगे, जिनको क्रेडिट एवं फार्मूला के अनुसार परसेन्टाईल एवं ग्रेड में सॉफ्टवेयर द्वारा परिवर्तित किया जायेगा। सभी विषयों की परीक्षा 25 प्रतिशत सतत आन्तरिक मूल्यांकन एवं 75 प्रतिशत बाह्य मूल्यांकन के आधार पर की जायेगी। सभी विषयों की लिखित परीक्षा होगी एवं अनिवार्य को–करीकुलर विषय की परीक्षा बहु–विकल्पीय आधार पर होगी।

बैठक में कुलपति प्रो0 रविशंकर ने सदस्यों से एनईपी–2020 के तहत प्रवेश प्रक्रिया में आवश्यक बदलाव किए जाने पर भी चर्चा की। कुलपति ने परीक्षा नियंत्रक उमानाथ, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार तथा प्रोग्रामर रवि मालवीय को राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुरूप प्रवेश प्रक्रिया तथा ग्रेडिंग सिस्टम पर आगामी बैठक में प्रस्ताव प्रस्तुत किए जाने के लिए निर्देशित किया। कुलपति ने यह भी निर्देशित किया कि एन0ई0पी0 2020 की अनुशंसा के दृष्टिगत छात्रों को स्नातक स्तर पर प्रवेश के उपरान्त परीक्षा के लिए जो रोल नंबर आवंटित किया जाए उसमें, प्रवेश का वर्ष, संकाय कोड, पाठ्यक्रम कोड इत्यादि आवश्यक जानकारी को भी शामिल किया जाए।

बैठक के उपरांत एन०ई०पी० 2020 की तैयारियों के सम्बन्ध में प्राचार्यो एवं संयोजकों के साथ कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला को संबोधित करते हुए एन0ई0पी0 टास्क फोर्स के संयोजक प्रो0 एस0एन0 शुक्ल ने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार के उच्च शिक्षा विभाग द्वारा गठित राज्य स्तरीय समिति एवं राज्य संकायवार मार्गदर्शन समितियों ने सम्यक् विचारोपरान्त तैयार न्यूनतम समान पाठ्यक्रम अनुमोदित कर उत्तर प्रदेश उच्च शिक्षा परिषद की वेबसाइट पर अपलोड कर दिया गया है। स्नातक पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में 46 क्रेडिट होंगे जिसमें तीन प्रमुख विषय, एक माइनर विषय, दो सह–पाठ्यक्रम एवं दो व्यावसायिक पाठ्यक्रम होंगे। जिसे उत्तीर्ण करने पर प्रमाण–पत्र प्रदान किया जायेगा। द्वितीय वर्ष के समाप्ति पर 92 क्रेडिट होंगे इसमें तीन प्रमुख विषय एक माइनर विषय, दो सह–पाठ्यक्रम तथा दो व्यावसायिक पाठ्यक्रम होंगे। उत्तीर्ण करने पर डिप्लोमा प्रदान किया जायेगा। तृतीय वर्ष के समाप्ति पर 138 क्रेडिट होंगे जिसमें दो प्रमुख विषय, दो सह–पाठ्यक्रम तथा दो माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट होंगे, जिसे उत्तीर्ण करने पर स्नातक की डिग्री प्रदान की जायेगी। चौथे वर्ष के समाप्ति पर 194 क्रेडिट होंगे जिसमें एक प्रमुख विषय, एक माइनर विषय तथा दो प्रमुख अनुसंधान परियोजना शामिल होगी। उत्तीर्ण करने पर स्नातक की उपाधि प्रदान की जायेगी। पांचवे वर्ष के समाप्ति पर 246 क्रेडिट होंगे जिसमें एक प्रमुख विषय एवं दो प्रमुख अनु–संधान परियोजना शामिल होगी। जिसे उत्तीर्ण करने के उपरान्त मास्टर डिग्री प्रदान की जायेगी। छठे वर्ष के समाप्ति पर 270 क्रेडिट होंगे जिसमें एक प्रमुख विषय एक अनुसंधान पद्धति एवं एक प्रमुख अनुसंधान परियोजना को सम्मिलित किया गया है जिसे उत्तीर्ण करने के उपरान्त पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन रिसर्च प्रमाण–पत्र दिया जा सकेगा। कार्यशाला में प्रो0 शुक्ल ने पीपीटी के माध्यम से पाठ्यक्रमों की संरचना पर विस्तृत प्रकाश डाला।

बैठक एवं कार्यशाला में कुलसचिव उमानाथ ने उपस्थित सदस्यों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। मौके पर प्रो0 एस0एस0 मिश्र, प्रो0 नीलम पाठक, प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, प्रो0 आर0के0 सिंह, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, प्रो0 शैलेन्द्र वर्मा, प्रो0 रमापति मिश्र, उप कुलसचिव विनय कुमार सिंह, डॉ0 अशोक राय, डॉ0 अजय कुमार सिंह, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 बृजविलास पाण्डेय, डॉ0 के0एन0 पाण्डेय, डॉ0 सुरेन्द्र मिश्र, डॉ0 जे0बी0 पाल, डॉ0 अनिल श्रीवास्तव, डॉ0 नर्वदेश्वर पाण्डेय, डॉ0 राम सुन्दर, डॉ0 सीता राम सिंह, डॉ0 विनोद कुमार, डॉ0 दानपति त्रिपाठी, डॉ0 शैलेन्द्र सिंह, डॉ0 आदित्य नारायण, डॉ0 महेन्द्र पाठक, डॉ0 फौजदार सिंह, डॉ0 मीनू सहगल, डॉ0 प्रणय तिवारी, डॉ0 विनय कुमार सिंह, पारितोष, आस्था, मनीषा यादव, डॉ0 महिमा चौरसिया, सम्बद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्य एवं विभिन्न विषयों के संयोजक तथा प्रोग्रामर रवि मालवीय, गिरीशपंत, सुरेन्द्र प्रसाद उपस्थित रहे।

परिसर में औषधीय पौधों का रोपण

05 जून। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग संस्थान में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर कोविड–19 प्रोटोकाल के तहत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने औषधीय पौधों का रोपण किया। इसमें पीपल, अर्जुन, गिलोय, तुलसी, नीम एवं अशोक के पौधे शामिल रहे।

कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि वर्तमान कोविड महामारी में औषधीय पौधे के

महत्व को बढ़ा दिया है। इसके निरन्तर प्रयोग से वायरस जैसी बीमारी से लड़ा जा सकता है। कुलपति ने विश्व पर्यावरण दिवस पर शिक्षकों एवं छात्र–छात्राओं से आह्वान किया कि आप अपने आस–पास कोविड प्रोटोकाल के तहत एक पौधे को जरूर लगाएं। इससे आने वाली पीढ़ी को स्वस्थ्य माहौल दे सकेंगे। पर्यावरण को स्वच्छ बनाये रखने के लिए इस तरह के वृक्षारोपण कार्यक्रम निरन्तर होने चाहिए।

संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्रा जी ने बताया कि परिसर में 1000 औषधीय पौधों का रोपण अनवरत जारी रहेगा। वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन राजीव कुमार द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से कुलपति के ओ0एस0डी0 डॉ0 शैलेंद्र सिंह, प्रो0 शैलेंद्र कुमार वर्मा, डॉ0 विनोद चौधरी, डॉ0 मनीष सिंह, डॉ0 महिमा चौरसिया, प्रवीण मिश्रा, विनीत सिंह अनुराग सिंह, नवीन पटेल सहित अन्य शिक्षकों ने औषधीय पौधे लगाए।

मंथन

15 जून 2021: ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी, विक्रम संवत् 2078

'सफलता पाने के लिए मन से डर का निकलना जरूरी है'

पर्यावरण जन–जागृति की जरुरत

प्रकृति जो हमें जीने के लिए स्वच्छ वायु, पीने के लिए साफ शीतल जल और खाने के लिए कंद–मूल–फल उपलब्ध कराती रही है, वही अब संकट में है। आज उसकी सुरक्षा का सवाल उठ खड़ा हुआ है। यह धरती माता आज तरह–तरह के खतरों से जूझ रही है। सभ्य समाज में मूलतः विकास का अभिप्राय प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की मूलभूत जरूरतें रोटी, कपड़ा और मकान की पर्याप्त पूर्ति से है। जन–जन के जीवन स्तर में गुणात्मक परिवर्तन ही विकास है। लोगों की खुशहाली एवं समृद्धि से ही देश के विकास का मापन होता है। विकास प्रक्रिया में केवल आर्थिक ढांचे में ही परिवर्तन नहीं होता है बल्कि उसका अंतर्सम्बन्ध पूरे सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से जुड़ा होता है। पर्यावरण संतुलन को दृष्टिगत रखते हुए विकास की राह चुनना ही सतत विकास है। सतत विकास भावी पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता किए बिना सभी के लिए जीवनयापन का एक सभ्य मानक को समर्पित है और इसी लक्ष्य की प्राप्ति से खुशहाल भारत का निर्माण किया जा सकता है। विकास की तीव्र धारा ने जहां लोगों को सुविधा सम्पन्न बनाया है वहीं वातावरण को बेहिसाब प्रदूषित किया है। पर्यावरण में प्रदूषण का इतना ज्यादा जहर घुल चुका है कि सम–विषम फॉर्मूले को लागू कराने के लिए सुप्रीम कोर्ट को दखल देना पड़ा है। स्वस्थ रहने की पहली कसौटी है, साफ–सुथरी हवा, जो स्वच्छ पर्यावरण में ही संभव है। जीवन में स्वच्छ पर्यावरण के विशेष महत्व को दृष्टिगत रखते हुए ही देश में व्यापक स्तर पर स्वच्छता अभियान चल रहा है। पर्यावरण जन–जागृति से अभिप्राय जन–जन को ऐसे जीवन–शैली के प्रति सचेष्ट करना है जिससे न्यूनतम पर्यावरण दूषित हो। इसके साथ ही पर्यावरण संरक्षण एवं संतुलन के लिए वृक्षारोपण, जलाशयों का निर्माण, झीलों की साफ–सफाई आदि के लिए प्रोत्साहन भी देना है। जन–जन को साक्षर या जागरुक बनाने में मीडिया की निर्णायक भूमिका होती है। मीडिया न केवल भलीभांति किसी समस्या को जनता के समक्ष उद्घाटित करता है बल्कि संभावित खतरों से आगाह करता है एवं समस्या के समाधान का रास्ता भी दिखाता है। पर्यावरण एक ऐसा विषय है जिसके बारे में देश की अधिसंख्य आबादी अनजान है जबकि इसको प्रदूषित करने में प्रायः सभी नागरिक जिम्मेदार हैं। पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए समाज में जन–जागृति और पर्यावरण साक्षरता आज की आवश्यकता है। पर्यावरण जन–जागृति को प्रेरित एवं उसकी गति को गुणित करने में मीडिया एक प्रयोजनपरक साधन है।

हिन्दी मीडिया पर वैश्वीकरण का प्रभाव

डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा

नित नव रूप में मीडिया में हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। मीडिया के साथ हिन्दी ने भी संचार किया है। माध्यम बदले हैं तो हिन्दी ने भी अपने तेवर बदले हैं। गांधी की दुनिया से लेकर ग्लोबल दुनिया तक जो कुछ बदला है लगभग उसी तरह के परिवर्तन हिन्दी मीडिया में भी दिखाई पड़ते हैं। वक्त के साथ कदमताल करने वाली आज की हिन्दी कम्प्यूटर सैवी जरूर है परन्तु इसमें अपनी माटी की सोंधी सुगंध बरकरार है।

भारत बहुसंस्कृति के साथ–साथ भाषा वैविध्य का भी देश है जहां कोस–कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी कहावत चरितार्थ होती है। भाषा ही संस्कृति, समाज और जीवन को अभिव्यक्ति प्रदान करती है। भाषा ही अतीत और वत. मान के मध्य सेतु का कार्य करती है और भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्त करती है। भाषा ही नर और वानर का विभेद करती है।

जनमाध्यमों में भाषा की अपनी भूमिका होती है। यहां तक कि दृश्य माध्यमों में भी भाषा के बिना दृश्यों को समझना मुश्किल हो जाता है चाहे मुद्रित माध्यम हो या श्रव्य माध्यम, भाषा के प्रयोग में अत्यधिक सावधानी और कुशलता की जरूरत होती है। जनमाध्यमों में जो भाषा प्रयुक्त होती है उसे व्यापक जनसमुदाय पढ़ता है। हिन्दी भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। यह देश की संपर्क भाषा है। हिन्दी को भाषा के तौर पर देखा जाय तो दुनिया की जबानों की सूची में इसका नंबर छठा है। जनमाध्यमों की वजह से इसका प्रसार क्षेत्र सारे भारत में है। इसे वे लोग भी सुनते हैं और बोलते हैं जिनकी हिन्दी मातृभाषा नहीं हैं। हिंदी विकासशील भाषा है और उसका स्वभाव आरंभ से ही समावेशी रहा है इसलिए इसने अपने संसर्ग में आने वाली दूसरी भाषाओं से बहुत कुछ ग्रहण किया है। वैश्वीकरण और संचार क्रांति से जो नई वैश्विक शब्दावली सामने आई है, उसके लिए भी हिन्दी ने अपने दरवाजे पूरी तरह से खोल दिए हैं। विज्ञान, तकनीक, संचार, कम्प्यूटर, मनोरंजन, फैशन, फूड, लाइफ–स्टाइल आदि से संबंधित कई नए शब्दों को धीरे–धीरे हिन्दी ने अपना लिया है। भाषा को आप चाहे संस्कृति का ही अंग मानें चाहे उससे भिन्न, दोनों के घनिष्ठ सम्बंध को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। भारत में वैश्वीकरण के आगमन के साथ सूचना–माध्यमों का भी कलेवर बदला है। हिंदी मीडिया की संस्कृति में आमूल–चूल परिवर्तन देखने को मिला है। वैश्वीकरण के दौर में ही जनमाध्यमों ने चोला ही नहीं बदला अपितु विदेशी जमीन पर भी अपनी पहुंच बनाई है। वैश्वीकरण से जहां हिन्दी जनमाध्यमों की कमाई और पहुंच बढ़ रही है वहीं हिन्दी भाषा का प्रसार भी तेजी से हो रहा

जन–अभिव्यक्ति

ई–मासिक पत्रिका अवध अभिव्यक्ति से विश्वविद्यालय की गतिविधियों की जानकारी होती है। बाबा साहब आम्बेडकर,, पृथ्वी दिवस और ज्योतिबा फुले पर लेख बेहद रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक लगे।

– रोशनी कुमारी

बुद्धं शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि

अंकिता श्रीवास्तव

बुद्ध पूर्णिमा बौद्ध धर्म में आस्था रखने वालों का एक प्रमुख त्यौहार है। वैसाख माह की पूर्णिमा के दिन गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था। इसी दिन महात्मा बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। वैसाख माह की पूर्णिमा के दिन ही उनका महापरिनिर्वाण भी हुआ था। हिन्दू धर्मावलंबियों के लिए गौतम बुद्ध विष्णु के नौवें अवतार हैं।

गौतम बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी ग्राम में हुआ। उनका नाम सिद्धार्थ रखा गया। सिद्धार्थ के जन्म के सात दिन बाद ही उनकी माता का देहांत हो गया। सिद्धार्थ की मौसी गौतमी ने उनका लालन–पालन किया। सिद्धार्थ ने वेद और उपनिषद् तो पढ़ने के साथ राजकाज और युद्ध –विद्या की भी शिक्षा ली। कुश्ती,घुड़–दौड़, तीर–कमान, रथ हांकने में तो कोई उनकी बराबरी नहीं कर पाता। सिद्धार्थ बचपन से ही कुशाग्र और गंभीर स्वभाव के थे। सिद्धार्थ से किसी भी प्राणी का दुख देखा नहीं जाता था। खेल में भी सिद्धार्थ को खुद हार जाना पसंद था लेकिन किसी को हराना और किसी का दुखी होना उनसे नहीं देखा जाता था।

सिद्धार्थ को तत्कालीन समाज में फैली दुख और पीड़ा ने इतना व्यथित कर दिया कि उन्होंने राजसी जीवन का त्याग कर दिया। यहां तक कि अपनी पत्नी और सोये हुए पुत्र को छोड़कर सत्य की खोज और संसार को दुखों से मुक्ति दिलाने के लिए घर से निकल गए। महाभिनिष्क्रमण की यह घटना उनके जीवन के 29वें वर्ष में घटी। गौतम बुद्ध ने हर कदम पर क्रांतिकारी विचारों का प्रादुर्भाव किया। ज्ञान प्राप्ति के भारतीय परंपरा जिनमें भोजन त्याग कर आत्म दमन करने पर ज्यादा जोर रहा, उसे बुद्ध ने अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा कि मनुष्य जो कुछ भी ज्ञान प्राप्त कर सकता है, वह स्वस्थ शरीर में एक स्वस्थ मस्तिष्क के जरिए ही प्राप्त किया जा सकता है। उस युग में भारत के लिए यह धारणा बिलकुल नई थी। सात वर्षों तक भटकते रहने के बाद 35 साल की उम्र में बोध गया में एक पीपल के वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। इसके बाद सिद्धार्थ बुद्ध यानि प्रज्ञावान कहलाने लगे। वैशाख पूर्णिमा के दिन ज्ञान की प्राप्ति होने से यह दिन बुद्ध पूर्णिमा के रूप में जाना गया। यह भी एक संयोग ही है कि चालीस साल तक लगातार उपदेश देते रहने के बाद वैशाख पूर्णिमा के दिन हीं ईस्वी पूर्व 483 में 80 साल की आयु में कुशीनगर जिले के कसया नामक गांव में उन्होंने शरीर का त्याग कर दिया। यह घटना इतिहास में महापरिनिर्वाण के रूप में दर्ज है।

महात्मा बुद्ध का मानना था कि व्यक्ति का जीवन दुखों से भरा होता है, जो व्यक्ति तृष्णा रखता है, वह दुखी ही रहता है। व्यक्ति तृष्णा का त्याग कर सुखी जीवन जी सकता है। भगवान बुद्ध की शिक्षाएं मात्र उपदेश नहीं, अपितु वे तो अनुभव पर आधारित थी। उनकी शिक्षाओं ने हर रुढियों तथा आडम्बर का परित्याग कर वास्तविक आध्यात्मिक जीवन अपनाने की शिक्षा दी। महात्मा बुद्ध ने बताया कि जीवन में सम्यक–दृष्टि, सम्यक–भाव, सम्यक–भाषण, सम्यक–व्यवहार, सम्यक–निर्वाह, सत्य–पालन, सत्य–विचार और सत्य–ध्यान से ही मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

महात्मा बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपने ज्ञान का प्रथम प्रवचन सारनाथ के नजदीक मृगदाव में दिया। यह उपदेश 'धर्म चक्र परिवर्तन' कहलाता जो बौद्ध मत की शिक्षाओं का मूल बिंदु है। महात्मा बुद्ध के उपदेशों और बौद्ध धर्म के विचारों को त्रिपिटकों में समाहित किया गया। सुतपिटक में बुद्ध के धार्मिक विचारों और वचनों का संग्रह किया गया है। वहीं विनय पिटक में बौद्ध संघ के नियम लिखे गए जबकि अभिधम्मपिटक में बौद्ध दर्शन की विवेचना की गई है। महात्मा बुद्ध आज भी लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं।

समाज एवं संस्कृति का दर्पण है भारतीय सिनेमा

स्वाति खरे

भारतीय सिनेमा का इतिहास 100 वर्षों से अधिक का है। ल्यूमेरे ब्रदर्स द्वारा शूट की गई पहली फिल्म का प्रदर्शन 1896 में मुंबई में किया गया। इसके बाद भारत में भी फिल्मों के दौर की शुरुआत हुई। भारत में सर्वप्रथम दादा साहब फाल्के के प्रयासों से 1913 में सबसे पहली भारतीय फिल्म राजा हरिश्चंद्र बनी, जो एक मूक फिल्म थी। दादा साहब फाल्के ने 1913 से 1918 तक 23 फिल्मों का निर्माण किया, आगे चलकर इसकी व्यवसायिक सफलता पर लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ और 1920 के दशक की शुरुआत में कई फिल्म निर्माण कंपनियां सामने आईं। भारतीय सिनेमा के शुरुआती दौर में धार्मिक और ऐतिहासिक कथानकों पर आधारित फिल्मों का वर्चस्व रहा। आर्देशिर ईरानी द्वारा निर्मित पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' का प्रदर्शन 1931 में किया गया। आलम आरा के प्रदर्शन से भारतीय सिनेमा के इतिहास में एक नए युग की शुरुआत हुई, जिसके बाद भारतीय सिनेमा में लगातार प्रगति हुई।

1940 के दशक में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान फिल्मों की संख्या में कमी देखी गयी। मूलरूप से आधुनिक फिल्म उद्योग का जन्म 1947 के आसपास हुआ, श्रेष्ठ फिल्म निर्माता सत्यजीत रे और विमल राय ने निम्न वर्ग के अस्तित्व और दैनिक जीवन पर आधारित फिल्मों का निर्माण किया, इनमें अधिसंख्य फिल्में समाज में व्याप्त कुरीतियों यथा वेश्यावृत्ति, दहेज, बहुविवाह और भ्रष्टाचार जैसे विषयों पर आधारित थी।

1950 और 1960 के दशक को भारतीय सिनेमा को स्वर्ण युग माना जाता है। इस काल में गुरुदत्त, राज कपूर, दिलीप कुमार, मीना कुमारी, मधुबाला, नरगिस, नूतन, देवानंद और वहीदा रहमान जैसे कलाकारों का उदय हुआ, जिसके कारण भारतीय फिल्म उद्योग को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जगह मिली। इस समय प्रेम रोमांस पर आधारित फिल्मों का दौर रहा और यह युग भारतीय सिनेमा का स्वर्ण युग रहा। इसी दौर में हिंदी सिनेमा ने एक से बढ़कर एक सदाबहार गीत जनता को तोहफे में दिए। यही वह समय था जब भारतीय सिनेमा को वैश्विक स्तर पर पहचान मिली।

आगे चलकर 1970 और 1980 के दशक में अमिताभ, धर्मेन्द्र, शत्रुघ्न एवं अन्य की मार–धाड़ और मसाला पर आधारित फिल्मों का दौर रहा। इस दशक में जंजीर, शोले, दीवार, राम–बलराम, विश्वनाथ, क्रांति आदि फिल्में प्रमुख रही।

1990 के बाद फिल्म जगत में क्रांति का युग रहा, जहां नये–नये कलाकारों शाहरुख खान, सलमान खान, माधुरी दीक्षित, आमिर खान जूही चावला आदि ने अभिनय को नई उंचाई दी। इस दौर में नई शैली एवं नई तकनीकों के इस्तेमाल के कारण भारतीय फिल्म उद्योग नये शिखर पर पहुंचा। 2008 में भारतीय फिल्म स्लमडॉग मिलेनियर में सर्वश्रेष्ठ संगीत के लिए ए0 आर0 रहमान को अकादमी पुरस्कार मिला। 21वीं सदी के दौर में फिल्म क्षेत्र में आधुनिकता और यथार्थवाद को स्थान मिलने लगा, जिस पर पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव पड़ा। वेब पर आधारित फिल्मों का दौर भी शुरू हुआ है।

धार्मिक और पौराणिक कथाओं से शुरुआत करने वाला भारतीय सिनेमा बाजारवादी सिनेमा तक पहुंचते–पहुंचते कई करवटें ले चुका है। सिनेमा में सही दिशा में कार्य किया जाए, तो निश्चित ही समाज पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

सुविचार

उठो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य प्राप्त ना हो जाए।

– स्वामी विवेकानंद

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

टीकाकरण अभियान

अपराजिता

प्रमुख संरक्षक
प्रो0 रवि शंकर सिंह
संरक्षक
डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी,
समन्वयक
प्रकाशक
श्री उमानाथ, कुलसचिव
सम्पादक
डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा

संकलन एवं सम्पादन
अभिषेक, सुरभि, ज्योति

Feedback
avadhabhivyakti@gmail.com

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

नवाचार भारत के सतत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगाः डॉ0 मनप्रीत

07 जून । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के आईईटी संस्थान में 'इंजीनियरिंग रिसर्च एण्ड इनोवेशन टू विन ओवर कोविड–19' विषय पर पांच दिवसीय(07–11 जून, 2021) राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारम्भ किया गया।

कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि एक अच्छा नवाचार वह होता है जो जनसाधारण को आसानी से कम लागत में उपलब्ध कराया जा सके। उन्होंने छात्रों से कहा कि नवाचार के माध्यम से जनसेवा कर विश्वविद्यालय तथा अयोध्या का नाम रोशन कर सकते हैं।

कुमार द्वारा प्रस्तुत किए गए इनोवेशन मॉडल की सराहना करते हुए कहा कि सभी छात्रों को इससे प्रेरणा लेनी चाहिए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ए0आई0सी0टी0ई0 के पूर्व निदेशक डॉ0 मनप्रीत मन्ना ने नवाचार के लिए सोच एवं लिखावट पर जोर देते हुए छात्रों से कहा कि जब भी कोई अद्भुत कल्पना मस्तिष्क में आए तो उसे तुरंत लिखकर साकार करने की कोशिश ही नवाचार है। उन्होंने छात्रों से कहा उनके द्वारा किया गया नवाचार भारत के सतत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

विशिष्ट अतिथि के रूप में के लिए प्रेरित किया तथा आश्वस्त किया कि शोध कार्य में जो भी सहायता बन पड़ेगी, उसे पूरा किया जायेगा। संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र ने कार्यक्रम को संचालित करते हुए पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने छात्रों को नवाचार पेटेंट कराने के लिए तथा शोध कार्य को करने के लिए प्रेरित किया। कार्यशाला को नुपुर केसरवानी, दीपिका केसरवानी एवं अवधेश मौर्य ने भी संबोधित किया।

कार्यशाला का शुभारम्भ सरस्वती वंदना एवं कुलगीत से किया गया। अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन संस्थान के प्रो0 मोहित

कुलपति प्रो0 सिंह ने छात्रों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि नवाचार को छात्र उद्देश्य बनाकर कार्य करें, इससे कोरोना महामारी को मात दी जा सकती है। कुलपति ने कहा कि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है। नवाचार के क्षेत्र में निरन्तर अनुसंधान करते रहना चाहिए। संबोधन के अंत में कुलपति ने आई0ई0टी0 के छात्र विनोद बंगलुरु के विद्यासंघ टेक्नोलॉजी के सी0ई0ओ0 ए0टी0 किशोर ने ऑक्सीजन उत्पादन, संचरण उपयोगों के विभिन्न चरणों को विस्तार से बताते हुए छात्रों को ऑक्सीजन उत्पादन टेक्नोलॉजी, सुरक्षा व बचत पर तकनीकी पहलुओं से अवगत कराया। इसी क्रम में आई0ई0टी0 एवं विज्ञान संकायाध्यक्ष प्रो0 सी0के0 मिश्रा ने छात्रों को नवाचार तथा शोध गंगवार द्वारा किया गया। कार्यक्रम में संयोजक शोभित श्रीवास्तव एवं राजीव कुमार ने इनोवेशन के लिए छात्रों को प्रेरित किया। इस अवसर पर प्रो0 तरुण गंगवार, डॉ0 रवि प्रकाश पांडे, डॉ0 शैलेश कुमार, डॉ0 महिमा चौरसिया, डॉ0 सुधीर श्रीवास्तव, आस्था, मनीषा यादव, रमेश मिश्रा, परितोष, श्वेता सहित बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं ऑनलाइन जुड़े रहे।

पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु ऑनलाइन आवेदन

01 जून। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कौटिल्य प्रशासनिक भवन के सभागार में सत्र 2021–22 के विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह की अध्यक्षता में कोविड प्रोटोकाल का अनुपालन करते हुए ऑफलाइन एवं ऑनलाइन बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में प्रवेश समन्वयक प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव ने कुलपति प्रो0 सिंह को प्रवेश प्रक्रिया की तैयारियों के सम्बन्ध में बिन्दुवार जानकारी दी।

बैठक में कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने बताया कि आवासीय परिसर के विभिन्न पाठ्यक्रमों एवं संघटक महाविद्यालयों में प्रवेश प्रक्रिया काउंसिलिंग के माध्यम से की जायेगी जिसका सभी महाविद्यालयों को अनुपालन करना होगा। प्रवेश समिति ने प्रवेश आवेदन करने की अन्तिम तिथि 15 जुलाई निर्धारित की है जिसे शीघ्र ही विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड कर दिया जायेगा। इसके पश्चात ऑनलाइन फार्म का पंजीकरण प्रारम्भ हो जायेगा।

बैठक में विभिन्न पाठ्यक्रमों में सीटों की संख्या, न्यून–तम योग्यता एवं शुल्क जमा करने की प्रक्रिया पर चर्चा की गई। उसके उपरान्त यह निर्णय लिया गया कि प्रवेश प्रक्रिया ऑनलाइन मोड में सम्पादित किया जायेगा। कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि उत्तर–प्रदेश शासन द्वारा विश्वविद्यालय को प्रदान किए गए अयोध्या, सुल्तानपुर एवं गोण्डा में तीन राजकीय महाविद्यालयों में प्रवेश की प्रक्रिया सत्र 2021–22 में की जाएगी। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन ने इन तीनों कालेजों में नोडल अधिकारियों की नियुक्ति कर दी है।

बैठक में कुलपति ने प्रवेश प्रक्रिया को ऑनलाइन मोड पर पूर्ण रूप से पारदर्शी एवं नव–प्रवेशित होने वाले छात्र–छात्राओं के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए कहा कि कोई भी छात्र जो पढ़ना चाहता हैं उसे प्रवेश की सुविधा नियमानुसार उपलब्ध कराई जाएगी। इसके साथ ही प्रवेश प्रक्रिया के लिए सेल को हर प्रकार की सुविधाओं के साथ प्रशासनिक सहयोग प्रदान करने की स्वीकृति दी। कुलपति ने सभी विभागाध्यक्षों से कहा कि नये पाठ्यक्रमों को भी अपने स्तर से संचालित करने का प्रयास करें।

बैठक में विश्वविद्यालय के वित्त अधिकारी धनंजय सिंह, कुलसचिव उमानाथ, मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, प्रवेश सेल के उपसमन्वयक प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, प्रो0 आर0 के0 सिंह, प्रो0 चयन कुमार मिश्रा, प्रो0 के0 के0 वर्मा, प्रो0 जसवन्त सिंह, प्रो0 नीलम पाठक, प्रो0 एस0 एस0 मिश्र, प्रो0 अशोक शुक्ला, प्रो0 अनुपम श्रीवास्तव, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा, प्रो0 अनूप कुमार, डॉ0 अनिल यादव, डॉ0 आर0 पी0 मिश्र, डॉ0 सुरेन्द्र मिश्रा, डॉ0 संदीप कुमार, डॉ0 मुकेश वर्मा, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 विनय मिश्र, डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा, प्रोग्रामर रवि मालवीय, राजीव कुमार, डॉ0 संग्राम सिंह, गिरीश चन्द्र पंत, गणेश शंकर एवं विष्णु प्रताप यादव शामिल रहे।

अवध विश्वविद्यालय में हिन्दी पत्रकारिता दिवस मनाया गया

30 मई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग में 'हिन्दी पत्रकारिता दिवस' के अवसर पर वर्चुअल कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभाग के समन्वयक डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी ने कहा कि हिन्दी पत्रकारिता ने कोरोना काल में अपनी दक्षता का परिचय दिया है। इस महामारी में पत्रकारिता ही है जिसने अधिक से अधिक लोगों को जागरूक किया है। उन्होंने उन सभी पत्रकार बन्धुओं जिन्होंने फ्रंट लाइन कोरोना योद्धा के रूप में अपने कर्तव्यपथ पर चलते हुए प्राण न्योछावर कर दिए, को श्रद्धाजंलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता सेवाभाव सिखाती है। इसके माध्यम से व्यक्ति समाज की सेवा कर सकता है। पत्रकारिता में बने रहने के लिए समर्पण का होना बहुत जरूरी है, इसके बिना पत्रकारिता नहीं हो सकती है।

कार्यक्रम में विभाग के वरिष्ठ शिक्षक डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि पत्रकारिता में भाषा पर अधिकार होना जरूरी है। इसके साथ शब्दों का सही चयन व प्रस्तुति का होना आवश्यक है। प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं सोशल मीडिया में हिन्दी का महत्व काफी बढ़ गया है। इसके लिए निरन्तर अध्ययन करते रहना चाहिए। पत्रकारिता की भाषा जन की भाषा होनी चाहिए जिसे आसानी से ग्रहण किया जा सके।

इसी क्रम में विभाग के डॉ0 अनिल कुमार विश्वा ने कहा कि हिन्दी पत्रकारिता में शब्दों का विशेष महत्व है। शब्द ऐसे होने चाहिए जिससे घटना को आसानी के साथ व्यक्त किया जा सके। भाषा में शालीनता अत्यंत आवश्यक है।

कार्यक्रम में छात्र–छात्राओं ने भी विचार व्यक्त किया। इस अवसर पर आशुतोष, शिवराम, अमन, अभय, पुनीत, अमित, अंकिता, अंशुमान, शशांक, अंतिमा, अभिषेक, अपराजिता, दिनेश, इमरान, चन्द्रभूषण, आशुतोष, जनार्दन, ईशिता, प्रगति, प्रतिभा सहित अन्य छात्र–छात्राओं की उपस्थित रही।

महिलाओं को पर्याप्त संतुलित आहार लेना चाहिए : डॉ0 अंजलि

19 अप्रैल। अवध विश्वविद्यालय के वीमेन ग्रीवेंस एवं वेलफेयर सेल तथा प्रदेश सरकार द्वारा संचालित मिशन शक्ति अभियान के तहत ''महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए पोषण'' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया।

मुख्य वक्ता आहार विशेषज्ञ डॉ0 अंजलि सिंह ने बताया कि महिलाओं को परिवार की बहुत सी जिम्मेदारियों का निवर्हन करना होता है अतः महिलाओं को अपनी सेहत का भी ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने संतुलित भोजन को अच्छी सेहत का आधार बताते हुए कहा कि हमारे भोजन में सभी पौष्टिक तत्व कार्बोहाइड्रेड, प्रोटीन, विटामिन, खनिज पदार्थ इत्यादि का सेवन करना चाहिए। हमारे शरीर को तभी आवश्यक पौष्टिक तत्व प्राप्त हो सकेंगे। उन्होंने बताया कि संतुलित आहार लेने से हम कुपोषण और अन्य बीमारियों से बच सकते हैं। भोजन को चबा कर ग्रहण करना चाहिए। भोजन करते समय तनाव नहीं लेना चाहिए। इस प्रकार हम अच्छे भोजन से अच्छे स्वास्थ्य को प्राप्त कर सकते हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही सेल की समन्वयक प्रो0 तुहिना वर्मा ने बताया कि एक अच्छी सेहत के लिए संतुलित आहार का लेना बहुत जरूरी है। इसके न लेने से तमाम बीमारियां घर कर जाती है। कार्यक्रम में सह–समन्वयक डॉ0 सिंधु सिंह द्वारा अभिभावकों एवं छात्राओं को आत्मसुरक्षा की शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम का संचालन सरिता द्विवेदी ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, डॉ0 महिमा चौरसिया, मनीषा यादव, निधि अस्थाना, डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी, नीलम मिश्रा सहित शिक्षक एवं छात्र–छात्राएं ऑनलाइन जुड़े रहे।

घरेलू हिंसा को रोकने के लिए सभ्य समाज को आगे आना होगाः डॉ0 अर्चना

15 अप्रैल । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के वीमेन ग्रीवेंस एवं वेलफेयर सेल द्वारा मिशन शक्ति अभियान के तहत 'घरेलू हिंसा अधिनियम के लाभ एवं चुनौत्तियां' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया।

वेबिनार को संबोधित करते हुए लखनऊ विश्वविद्यालय के विधि विभाग की डॉ0 अर्चना सिंह ने कहा कि घरेलू हिंसा अधिनियम महिलाओं पर घरों में हो रही हिंसा को रोकने के लिए सराहनीय कदम है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को घरों में कई प्रकार की हिंसा का सामना करना होता है जिसमें छींटाकशी, अपमान, मारपीट कई प्रकार की हिंसात्मक गतिविधियां शामिल है। उन्होंने बताया कि महिला का शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं यौन शोषण भी घरेलू हिंसा की श्रेणी में आते है। उन्होंने कहा कि सभ्य समाज में हिंसा का कोई स्थान नहीं है। घरेलू हिंसा को रोकने के लिए सभ्य समाज को आगे आना होगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं सेल की समन्वयक प्रो0 तुहिना वर्मा ने बताया कि प्रदेश सरकार द्वारा महिलाओं के हितों की सुरक्षा करने के लिए मिशन शक्ति अभियान चलाया जा रहा है। सेल द्वारा कोविड–19 की रोकथाम में महिलाओं की भूमिका विषय पर स्लोगन प्रतियोगिता एवं बालिका सुरक्षा शपथ का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। कुलसचिव उमानाथ ने प्रतियोगिता के प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करते हुए उनका मनोबल बढ़ाया। अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास के प्रो0 विनोद श्रीवास्तव ने प्रतिभागियों को कोविड–19 के नियमों का अनुपालन करने के लिए शपथ दिलाई।

तीन संघटक महाविद्यालयों में नोडल अधिकारी नियुक्त

02 जून। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि शासन द्वारा आवंटित 06 संघटक महाविद्यालयों में से 03 महाविद्यालयों में नये शैक्षिक सत्र 2021–22 से प्रवेश एवं अध्यापन का कार्य शुरू कर दिया जायेगा। विश्वविद्यालय प्रशासन ने तीन संघटक महाविद्यालयों में नोडल अधिकारियों को नियुक्त कर दिया है जिसमें राजकीय महाविद्यालय कटरा, चुग्घुपुर, सुल्तानपुर में प्रौढ़ सतत् प्रसार शिक्षा विभाग के सह–आचार्य डॉ0 सुरेन्द्र मिश्र को नोडल अधिकारी बनाया है। इसी क्रम में शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योगिक विज्ञान संस्थान के सहायक आचार्य डॉ0 मुकेश कुमार वर्मा को राजकीय महाविद्यालय परसवां, खण्डासा, मिल्कीपुर, अयोध्या एवं आई0ई0टी0 निदेशक के ओ0एस0डी0 डॉ0 संदीप कुमार को राजकीय महाविद्यालय, भवानीपुर कला इटियाथोक, गोण्डा का नोडल अधिकारी बनाया गया है।

राज्य सरकार के दिशा–निर्देश पर नई शिक्षा नीति को अमलीजामा पहनाने के लिए सत्र 2021–22 से संघटक तीन राजकीय महाविद्यालयों में कला संकाय से सम्बन्धित सात विषयों को संचालित किए जाने की योजना है। विश्वविद्यालय के नोडल अधिकारियों द्वारा संघटक महाविद्यालयों का स्थलीय निरीक्षण के साथ विस्तृत रिपोर्ट विश्वविद्यालय प्रशासन को सौंप दी गयी है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ ने बताया कि प्रदेश शासन द्वारा विश्वविद्यालय को 6 संघटक महाविद्यालय आवंटित किए गए है, इनमें से तीन संघटक महाविद्यालयों में नये शैक्षिक सत्र से शैक्षणिक कार्य संचालित किया जायेगा। कुलपति के निर्देश पर इन महाविद्यालयों में नोडल अधिकारी नियुक्त कर दिए गए है। इसके साथ उन अधिकारियों को उनके दायित्वों के बारे में सूचित भी कर दिया गया है।

- मिशन शक्ति अभियान के तहत अवध विश्वविद्यालय के वीमेन ग्रीवेंस एवं वेलफेयर सेल द्वारा "नारी सशक्तिकरण में राष्ट्रीय सेवा योजना की भूमिका" विषय पर 21 अप्रैल, 2021 को वेबिनार का आयोजन किया गया।
- अवध विश्वविद्यालय के वीमेन ग्रीवेंस एवं वेलफेयर सेल द्वारा 'बालिकाओं का व्यक्तित्व संवारने में एन0सी0सी0 की भूमिका' विषय पर 17 अप्रैल, 2021 को वेबिनार का आयोजन किया गया।
- अवध विश्वविद्यालय के वीमेन ग्रीवेंस एवं वेलफेयर सेल द्वारा मिशन शक्ति अभियान में ''नारी सशक्तिकरण–राष्ट्र निर्माण की ओर एक कदम'' विषय पर 16 अप्रैल, 2021 को वेबिनार का आयोजन किया गया।
- अवध विश्वविद्यालय परिसर में सत्रः 2021–22 से संचालित होने वाले डी0फार्मा एवं बी0फार्मा पाठ्यक्रमों को उत्तर प्रदेश सरकार ने अनापत्ति प्रमाण–पत्र प्रदान किया।

बालश्रम कानून को सख्त बनाए जाने की जरूरतः डॉ0 अजय

12 जून । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन केंद्र तथा महिला शिकायत एवं कल्याण प्रकोष्ठ द्वारा मिशन शक्ति अभियान के तहत 'विश्व बालश्रम निषेध दिवस' पर वेबिनार का आयोजन किया गया।

वेबिनार को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता का0सु0 साकेत पीजी कालेज, अयोध्या के विधि विभाग के डॉ0 अजय कुमार सिंह ने कहा कि बाल मजदूरी, बच्चों को शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अच्छे जीवन से वंचित कर रही है। इससे उनके व्यक्तिव और बौद्धिक विकास में रुकावट आ रही है। आज इस बात कि आवश्यकता है कि बालश्रम को समाप्त करके बच्चों को बेहतर भविष्य दिया जाए। उन्होंने विश्व बालश्रम निषेध दिवस विषय पर प्रकाश डालते हुए बताया कि गरीबी, जनसंख्या विस्फोट, सस्ता श्रम, उपलब्ध कानूनों का प्रभावी न होना, माता–पिता द्वारा बच्चों को स्कूल भेजने से रोकना बालश्रम के कारक हैं।

डॉ0 अजय ने कहा कि बालश्रम के विरुद्ध फैक्टरी कानून 1948, बालश्रम (निषेध व नियमन) कानून 1986, 2016 के कानूनों में बदलाव के साथ सख्त बनाए जाने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि बालश्रम हमारे देश व समाज के लिए एक बहुत ही गम्भीर विषय है। इस पर प्रभावी रोक लगाने के लिए हम सभी को अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझनी होगी, बालश्रम देश एवं समाज के लिए एक चुनौती बन गई है।

उन्होंने कहा कि बाल मजदूरी को कुछ लोगों द्वारा एक व्यापार बना लिया है। जिसके कारण हमारे देश में बालश्रम बढ़ता जा रहा है। इससे बच्चों का बचपन खराब होने के साथ भविष्य भी खराब हो रहा हे। जिससे देश में गरीबी फैल रही हैं एवं देश के विकास में बाधाएं आ रही हैं।

वेबिनार की अध्यक्षता कर रही महिला अध्ययन केंद्र तथा महिला शिकायत कल्याण प्रकोष्ठ की समन्वयक प्रो0 तुहिना वर्मा ने सर्वप्रथम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके दिशा–निर्देश पर वेबिनार का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि बालश्रम विश्व के लिए एक गम्भीर सामाजिक समस्या है, इससे बच्चों के सुखमय भविष्य को बर्बाद किया जा रहा है। इसे रोकने के लिए समाज को आगे आना होगा।

उन्होंने बताया कि प्रत्येक वर्ष 12 जून को विश्व के बाल श्रमिकों की दुर्दशा को उजागर करने के लिए सरकारी नियोक्ताओं, श्रमिक संगठनों, दुनिया भर के करोड़ों लोगों को एक साथ लाने के लिए विश्व बालश्रम निषेध दिवस का आयोजन किया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के मुताबिक विश्व में 21 करोड़ से अधिक और हमारे देश में एक करोड़ से अधिक बाल श्रमिक हैं। ऐसे आयोजनों से बालश्रम की समस्या के प्रति जागरूकता आएगी और ऐसे बच्चों को पढ़ने लिखने और समाज में उन्नति और विकास के लिए उचित अवसर प्राप्त होंगे।

कार्यक्रम की शुरूआत विश्वविद्यालय के कुलगीत की प्रस्तुति से की गई। कार्यक्रम का संचालन सेल की सदस्य डॉ0 सरिता द्विवेदी ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, सह–समन्वयक डॉ0 सिंधु सिंह, डॉ0 महिमा चौरसिया, डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी, निधि अस्थाना, नीलम मिश्रा सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े रहे।

सामूहिक प्रयास से ही कोरोना के खिलाफ लड़ाई जीत सकते हैंः कुलपति

12 मई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कोविड–19 महामारी से निपटने के लिए परिसर के विज्ञान विभागों को रिसर्च, टेस्टिंग, एवं आक्सीजन उत्पादन पर जोर देने के लिए प्रस्ताव तैयार करने का निर्देश प्रदान किया। इस सम्बन्ध में विश्वविद्यालय प्रशासन ने प्रस्ताव तैयार कराने की तैयारी तेज कर दी है। विश्वविद्यालय द्वारा 2 करोड़ 37 लाख का प्रस्ताव शीघ्र ही प्रदेश सरकार को भेजा जायेगा।

कोविड–19 महामारी से निपटने के लिए प्रदेश सरकार द्वारा राज्य विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों को आक्सीजन उत्पादन के लिए उपलब्धता सुनिश्चित कराने के लिए कहा गया था। इसी क्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 सिंह ने परिसर के बायोकमेस्ट्री, माइक्रोबायोलॉजी, बायोटेक्नोलॉजी, पर्यावरण विज्ञान एवं आई0ई0टी0 संस्थान को प्रस्ताव बनाने के लिए कहा है। विश्वविद्यालय के विभागों द्वारा प्रस्ताव को अंतिम रूप दे दिया गया है जिसमें तीन स्तर पर कार्ययोजना तैयार की गई है। पहले स्तर पर रिसर्च, टेस्टिंग एवं फैसिलिटी पर फोकस किया जायेगा। दूसरे स्तर पर परिसर में स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र को विस्तारित करने की योजना है। इनमें कोविड के मरीजों के लिए बेड, दवाईयों के साथ आक्सीजन की उपलब्धता सुनिश्चित कराई जायेगी। इसके साथ ही आई0ई0टी0 के सहयोग से परिसर में आक्सीजन प्लांट स्थापित किया जायेगा। ये तीनों प्रस्ताव शासन को शीघ्र प्रेषित किए जाएंगे। प्रदेश सरकार से सहमति प्राप्त हो जाने पर शीघ्र ही कार्य शुरू किया जायेगा। इससे विश्वविद्यालय एवं अयोध्या जनपद के निवासियों को इन सुविधाओं का लाभ मिल सकेगा।

कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि छात्रों को कोरोना महामारी से बचाव के लिए परिसर के शिक्षकों द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से जागरूक किया जा रहा है और उन्हें अवसाद से निकालने का प्रयास भी किया जा रहा है। उन्हें बराबर मास्क, दो गज की दूरी, भीड़–भाड़ वाली जगह से दूर रहने के साथ–साथ घर में रहने की सलाह दे रहे हैं। निश्चित ही इन सामूहिक प्रयास से कोरोना के खिलाफ लड़ाई जीत सकते हैं।

कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने बताया कि कोविड महामारी की दूसरी लहर में बड़ी संख्या में जन–हानि हुई है। इसमें विश्वविद्यालय परिवार भी अछूता नहीं रहा है। कुलपति ने बताया कि कोरोना का प्रकोप तेजी से बढ़ रहा है। केन्द्र व प्रदेश सरकारें अपने स्तर से कोई कोर कसर नहीं छोड़ रही हैं। फिर भी हम सभी को इस प्रकोप से बचने के लिए कोविड के प्रोटोकाल का पालन करना जरूरी है। इसी से अपने एवं परिवार को सुरक्षित रख सकते हैं।

पी–एच0डी0 सामान्य प्रवेश का परिणाम घोषित

01 जून। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के निर्देश पर विश्वविद्यालय प्रशासन ने पी–एच0डी0 सामान्य प्रवेश (सीईटी–2020) का अंतिम परिणाम घोषित कर दिया है। इसमें कुल 27 विषयों में 223 सीटों के सापेक्ष सफल अभ्यर्थियों की सूची विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.phdadmission.rmlauentrance.in पर अपलोड कर दी गई है।

पी–एच0डी0 प्रवेश–2020 के समन्वयक प्रो० शैलेंद्र कुमार वर्मा ने बताया कि कुल 27 विषयों में 223 सीटों के सापेक्ष सफल अभ्यर्थियों की सूची जारी की गयी है। इसमें अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, इलेक्ट्रॉनिक्स, उर्दू, गणित, गणित एव सांख्यिकी, जैव रसायन विज्ञान, दर्शनशास्त्र, पर्यावरण विज्ञान, प्राचीन इतिहास, प्राणि विज्ञान, भूगोल, भौतिकी विज्ञान, भौतकी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स, मध्यकालीन इतिहास, मनोविज्ञान, रसायन विज्ञान, रक्षा एवं स्त्रातेजिक विज्ञान, राजनीतिशास्त्र, व्यवसाय प्रबंधन एवं उद्यमिता, वनस्पति विज्ञान, वाणिज्य, संस्कृत, समाजशास्त्र, सूक्ष्म जीवविज्ञान, शिक्षा एवं हिन्दी विषय के शोधार्थियों के चयन के लिए, प्रवेश परीक्षा में सफल अभ्यर्थियों और नेट/जे0आर0एफ0 /एम0फिल0 व अन्य मान्य अर्हताधारी अभ्यर्थियों का साक्षात्कार इसी वर्ष लॉकडाउन से पूर्व कराया गया था। प्रो0 वर्मा ने बताया कि इस साक्षात्कार के सफल अभ्यर्थी अद्यतन सूचना के लिए विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट को नियमित अवलोकन करते रहें।

पी–एच0डी0 प्रवेश–2020 को सुचारू रूप सम्पन्न कराने में डॉ० नीलम यादव, डॉ० गीतिका श्रीवास्तव, डॉ० अभिषेक सिंह, डॉ0 आशुतोष सिंह, डॉ० राजेश सिंह कुशवाहा, प्रोग्रामर रवि मालवीय, अनुराग श्रीवास्तव, मनोज श्रीवास, ब्रह्मानंद एवं ओमप्रकाश चौरसिया की विशेष भूमिका रही।

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव खाद्य उत्पादन पर भी पड़ा हैः डॉ0 जगवीर

22 अप्रैल । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के पर्यावरण विज्ञान विभाग में पृथ्वी दिवस के अवसर पर "वेदर एंड क्लाइमेट सर्विसेस टूवर्डस हेल्थ एंड फूड सेफ्टी" विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि हमारें शास्त्रों में वर्णित है कि पृथ्वी हम सभी की मां है। इसे बचाये रखना हम सभी का नैतिक कर्तव्य है। पृथ्वी सिर्फ मनुष्य की नहीं है बल्कि इस पर निवास कर रहे सभी प्राणियों की है। मनुष्य सिर्फ अपने स्वार्थ में इसे नष्ट कर रहा है। कुलपति ने कहा कि हम सभी के लिए आक्सीजन बहुत जरूरी है। आक्सीजन हम सभी के लिए जीवन दायिनी है जिसके बिना जीवन नहीं है। इसे सहेजना हम सबकी जिम्मेदारी बनती है। पृथ्वी को सहेजने के लिए अपने आस–पास पेड़–पौधों का संरक्षण करें। कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि मानव के लिए कार्बनडाई ऑक्साइड का भी अपना विशेष महत्व है। इसका संतुलन भी बनाये रखना जरूरी है। पूरे विश्व में पर्यावरण को जो क्षति पहुंचाई गई है उसी का परिणाम रहा है कि कोरोना संक्रमण तेजी के साथ फैल रहा है। हम अपने स्वार्थ में एवं विकास के लिए पर्यावरण को नष्ट कर रहे हैं। सरकार द्वारा पृथ्वी को संरक्षित करने के लिए कई नीतियां बनाई गई है जिस पर कार्य चल रहा है। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक का उपयोग न करें। इसके स्थान पर कपड़े के थैले का उपयोग करे। सभी की एकजुटता से पृथ्वी को बचा पायेंगे। कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि पृथ्वी को बचाये रखने के लिए वर्तमान पीढ़ी की जिम्मेदारी बढ़ गई है। अगर यह नहीं किया गया तो आने वाली पीढ़ी के लिए समस्या बन सकती है।

वेबिनार के मुख्य अतिथि भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के निदेशक डॉ0 जगवीर सिंह ने कहा कि आज के परिवेश में जलवायु परिवर्तन एक महत्वपूर्ण कारण है जिससे हमारे पृथ्वी की पारिस्थितिकी में बदलाव देखा जा रहा है। जलवायु परिवर्तन से पृथ्वी का तापमान 1.52 डिग्री सेल्सियस बढ़ गया है तथा परिस्थितिकी में लगभग 8 प्रतिशत का क्षरण पाया गया है। भारत एवं वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव खाद्य उत्पादन पर भी पड़ा है जो कि प्रत्येक मानव के सतत् विकास पर प्रभाव डालता है। भारतीय मौसम विज्ञान के आकड़ों द्वारा कृषि कार्य में सुगमता के संदर्भ में डॉ0 सिंह ने बताया कि गुणवत्ता पूर्ण पूर्वानुमान से हम अपनी कृषि को और अधिक बेहतर कर सकते हैं। इसके साथ फसलों की रक्षा कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि पृथ्वी मंत्रालय, भारत सरकार आपदा प्रबन्धन, जलवायु परिवर्तन, मौसम आदि के साथ चार महत्वपूर्ण क्षेत्र वातावरण, समुद्र, भू–विज्ञान तथा ध्रुवीय विज्ञान में शोध एवं महत्वपूर्ण कार्य के लिए अग्रसर है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती वंदना के साथ किया गया। उसके उपरांत कुलगीत की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम का संचालन विभाग के विभागाध्यक्ष एवं कार्यक्रम के संयोजक प्रो0 सिद्धार्थ शुक्ल द्वारा किया गया। अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन विभाग के प्रो0 जसवंत सिंह ने किया। तकनीकी सहयोग राजीव कुमार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, डॉ0 विनोद चौधरी, डॉ0 संजीव, डॉ0 मुकेश वर्मा सहित बड़ी संख्या में शिक्षक एवं छात्र–छात्राएं ऑनलाइन मौजूद रहे।

खेलों में पुरूषों के मुकाबले महिलाएं देश को गौरवान्वित कर रही है : डॉ0 सिंह

18 अप्रैल। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के वीमेन ग्रीवेंस एवं वेलफेयर सेल ने प्रदेश सरकार द्वारा संचालित मिशन शक्ति अभियान के तहत ''नारी सशक्तिकरण में शारीरिक शिक्षा'' विषय पर वेबिनार आयोजित किया गया।

वेबिनार को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता सनातन धर्म पीजी कालेज, मुजफ्फरनगर के शारीरिक शिक्षा विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर एवं लेफ्टिनेंट डॉ0 श्याम नारायण सिंह ने कहा कि नारी सश. क्तिकरण में शारीरिक शिक्षा की अहम भूमिका होती है। खेल महिलाओं को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाती है। उन्होंने छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि शारीरिक शिक्षा से जुड़कर महिलाएं खेलों में प्रतिभाग कर प्रबंधन का हिस्सा बन सकती हैं। इससे शारीरिक एवं आर्थिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त होगा। आज महिलाएं खेल के क्षेत्र में पुरुषों से कहीं अधिक देश को गौरवान्वित कर रही हैं। खेलों के माध्यम से अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त कर पा रही हैं। डॉ0 सिंह ने वेबिनार में अन्तरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय महिला खिलाड़ियों का परिचय देते हुए छात्राओं का मनोबल बढ़ाया।कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही सेल की समन्वयक प्रो0 तुहिना वर्मा ने नारी सशक्तिकरण में शारीरिक शिक्षा के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि शारीरिक शिक्षा से महिलाओं में व्यक्तित्व का विकास होता है। इस क्षेत्र में छात्राओं को अधिक से अधिक हिस्सा लेना चाहिए। प्रो0 वर्मा द्वारा अभिभावकों और छात्राओं को आत्मसुरक्षा की शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, सहसमन्वयक डॉ0 सिंधु सिंह, डॉ महिमा चौरसिया, मनीषा यादव, निधि अस्थाना, डॉ0 सरिता द्विवेदी, नीलम मिश्रा सहित छात्र–छात्राएँ ऑनलाइन जुड़े रहे।